International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN 2250-253x (Print), E-ISSN-2320-544x, Issued -7, Vol- I, July, 2013

शोध पत्र - हिन्दी

समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श

* उमाटे साईनाथ तुकाराम

* शोधार्थी , हिन्दी विभाग, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद

कविता तथा अन्य सृजनात्मक क्षेत्र में स्त्री विमर्श का स्वर आज बुलंद है। स्त्री विमर्श स्त्री की स्वतंत्रता पर बल देनेवाला विचार है,, जिसे समकालीन दौर में काफी प्रोत्साहन मिल रहा है । मूलतः इसके पिछे स्वतंत्रता हनन के विरुध्द संघर्ष की अदम्बी ईच्छा है । शताब्दियों से चले आ रहे शोषण के खिलाफ लडने का साहस है जिसने समाज के विभिन्न शोषण तंत्रो के अधीन चरमरानेवाले क्षेत्रों को पहचाना। उनमें से एक है स्त्री का जीवन । पश्चिम के स्त्री मुक्तिवाद ने इसको नई दिशा भी दी। आज के भारतीय परिवेश में इसकी प्रामाणिकता बढी है।

स्त्री विमर्श स्त्रियों पर सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक रुप से थोपी गई मान्यताओं और रुढियों के विरोध में उभरा वैचारिक आन्दोलन है । सामाजिक परिदृश्य में जो वर्ग हाशिए पर चले गए थे उन्हे केन्द्र में लाने के लिए जो विमर्श उठे उन्ही में से एक प्रमुख विमर्श है स्त्री विमर्श। स्त्री विमर्श का मुख्य विषय स्वतंत्रता है । इसलिए स्त्री समाज की उन जीर्ण रुढियों से मुक्त होना चाहती है जो उसके भीतर के विद्रोह को अनदेखा कर उसके व्यक्तित्व को पंगु कर देती है । अतः उसे आवश्यकता स्वतंत्रता की है । सामाजिक या राजनीतिक स्वतंत्रता की नही, बल्कि दैहिक और मानसिक स्वतंत्रता की है। स्वतंत्रता चाहिए उसे रुढिवादी समाज के बन्धनों से जो स्त्री के भीतर की विद्रोही आवाज सुनने से ही इन्कार करता है । स्वतंत्रता चाहिए सामाजिक सोच की उस मानसिक शनक से जो स्त्री के समूचे अस्तित्व को फॅसाए रखता है। स्त्री का मन विद्रोह कर उठता है । और वह सदियों पुरानी रिवाजो और परंपराओं को पीछे छोड देती है, लेकिन स्त्री अभी भी अपने ही खोल से वफादारी और पारंपारिक स्त्रीत्व की कैद से बाहर नहीं निकल पाई है। उस दिन की हम उत्सुकता से प्रतीक्षा करेंगे जब कविता, स्त्रीत्व और स्वतंत्रता साथ–साथ चलते रहकर समाज का तीसरा नेत्र खोल देंगे ।[1]

स्त्री को स्वतंत्रता चाहिए समाज के संकीर्ण सोच से जो स्त्री के समूचे व्यक्तित्व को फॅसाए रखती है । स्त्री परंपरा और रुढियों से विद्रोह तो करती है लेकिन सबसे बडा यथार्थ यह है कि आज हमारे समाज की 80 से 90 प्रतिशत स्त्रियॉ खुद अपनी परंपरागत स्त्रीत्व की कैद से बाहर नही निकल पाई है । इसी संदर्भ में डॉ. सुमन राजे लिखती है, 'स्वतंत्रता का मूल अभिप्राय है 'निर्णय की स्वतंत्रता' और स्त्री स्वतंत्रता का रुप क्या होगा, यह स्वयं स्त्रियों को ही तय करना है, यह निर्णय कुछ विशिष्ट महिलाओं व्दारा नहीं लिया जा सकता।[2]

स्त्री विमर्श के लक्ष्य के सन्दर्भ में आलोकच सुधा बी.कहती है, ''स्त्री विमर्श केवल स्त्री की मुक्ति या पुरुष के बराबरी का आख्यान नहीं है बल्कि अत्यन्त गहन अर्थवाला यह शब्द नारीमुक्ति के साथ–साथ नारी की अस्मिता, चेतना व स्वाभिमान को भी अपने में समेट लेता है । स्त्री को अपने शरीर, अपने अस्तित्व या जीवन के स्वस्थ पक्षों को ग्रहण करके आत्मनिर्णय की ताकत प्रदान करना स्त्री विमर्श का प्रमुख लक्ष्य है।[3]

''वास्तव में स्त्री विमर्श स्त्री की अस्मिता और उसकी चेतना के आकलन का दूसरा रुप है। सदियों से स्त्री भोग की वस्तु मानी जाती रही है और आज की स्त्री भी भोग की वस्तु। वह इस भोग की दुनिया से स्वतंत्र होना चाहती है । अपने स्त्रीत्व के पहचान के लिए वह पुरुष से ही नहीं समाज से, यहॉ तक कि स्वयं स्त्री वर्ग से भी टकराने को तैयार है। इसलिए स्त्री विमर्श न दिखावा है न अपवाद। वह एक ही समय में हमारे देश और पूरी दुनिया से जुडा हुआ है । जो हमारे समय की जरुरत भी है।[4]

वस्तुतः स्त्री विमर्श का महास्वप्न स्त्री मुक्ति है। उसकी स्वतंत्रता है। अपने हक,आजादी, अधिकार और अस्तित्व को संकटग्रस्त होता देखकर उसे अपने भावों, अनुभवों तथा विचारों को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति देनी पडी । अतः स्त्री विमर्श का मूल स्वर प्रतिरोध से युक्त है और ये प्रतिरोध सदियों से चले आ रहे स्त्री के शोषण, उत्पीडन तथा पितृसत्तात्मक सत्ता आदि के खिलाफ है। संमकालीन साहित्यिक परिदृश्य में स्त्री विमर्श केंद्रीय विमर्श के रुप मे मौजूद है। और इस विमर्श ने आधी दुनिया को हाशिए से खींचकर मुख्य धारा में लाकर खडा कर देने का प्रयास किया है । वस्तुतः स्त्री विमर्श पुरुषों के समकक्ष स्त्रियों की सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक समानता का आन्दोलन है। स्त्रियॉ पहले पुरुषों के मुकाबले शारीरिक और बौध्दिक रुप से हीनतर मानी जाती थी । लेकिन आज की स्त्रियों ने अपने को हर क्षेत्र में स्थापित करके यह साबित कर दिया है कि वह पुरुष से किसी भी मामले में कमतर नहीं है। इसका असर समकालीन कविता के परिदृश्य में भी साफ देखा जा सकता

है। स्त्री विमर्श को नया आयाम देनेवाले रचनाकारों मे रघुवीर सहाय, अरूण कमल, राजेश जोशी, अलोक धन्वा, कात्यायनी, अनामिका, गगन गिल, निर्मला पुतुल, निलेश रघुवंशी आदि को देखा जा सकता है ।

प्रायः समकालीन साहित्य मे दो प्रमुख विषय चर्चा मे रहे– एक दलित विमर्श, दूसरा स्त्री विमर्श । समकालीन कथा साहित्य में इन दोनों पर काफी गहन चर्चा हुई है । समकालीन कविता भी इससे बच नहीं पायी है । इस दौरान महिलाओं ने जहॉ अपनी आत्मानुभवों का स्पष्ट चित्रण कर कथा साहित्य में अपना स्थान ा निर्धारित किया, वही कविंताओं मे अपनी अस्मिता की लडाई लढते एुए अपनी संवेदनाओं के विविध पक्षों पर प्रकाश डालते हुए मानवीय सराकारों को रेखांकित किया है ''स्त्री विमर्श की सैध्दान्तिकी के बाहर जाकर समकालीन कवयित्रियों ने इधर अनुभावों की जो दुनिया रची है, वह न पितृसत्तात्मक समाज के दमन से आक्रान्त है, न ''पर्सनल'' की ''पोलिटिकल'' बनाने की अनिवार्यता, बल्कि वह उनके सर्वथा निजी हालचाल के भीतर से उभरता हुआ वह आख्यान है, जो करुणा के नामपर भावुकता पीडित न होकर, आत्मविनोद और किसी दुसरी सत्ता के विरुध्द तीखे व्यंग से सजीव है ।[5] ऐसी समकालीन कवियित्रियों में कात्यायनी एक महत्वपूर्ण कवयित्री है । मुलतः उनका काव्यविमर्श पुरुष वर्चस्व का विरोध करता है। समकालीन कविता को दिशा देनेवाली उनकी 'गागी', 'इस स्त्री से डरो' और ''हॉकी खेलती लडकियॉ'' कविताओं में स्त्रियों की ऐतिहासिक नियती, सामाजिक अवस्थिति और मुक्ति की कल्पना के प्रतिनिधि रुपक हैं । ''इस स्त्री से डरो'' कविता में कात्यायंनी कहती है कि–जहॉ बन्धनों से जकडी एक साधाारण स्त्री के भीतर आजादी का एक अनन्त मानवीय स्पेस है :

यही स्त्री
सब कुछ जानती है
पिंजरे के बारे में
जाल के बारें में
यंत्रणा गृहों के बारे में । [6]

अपनी कविता से ही अपनी विद्रोही स्त्री व्दारा कात्यायनी स्थापित सत्ता को चुनौती देती है । उनकी कविताओं से जाहिर है कि वे नारीवादी है, किन्तु प्रचलित अर्थों मे नहीं। वह स्त्री की स्वतंत्रता चाहती है और पुरुष वर्चस्व का विरोध करती हैं। स्त्री का सारा जीवन पुरुष अधिपत्य से वह मुक्त करना चाहती है। स्त्री जिंन्दगी के हर मोड, मुकाम पर अपना अलग अस्तित्व स्थापित करना चाहती है। कात्यायनी की कविता से यह जाना जा सकता है कि वे जुझारु चेतना की कवयित्री है । उनकी कविताओं मे स्त्री संघर्ष के स्वरों और स्त्री की मुक्ति की कामना को पहचाना जा सकता है । उनकी कविता की स्त्रियॉ विद्रोही, जुझारु, जागरुक, आत्मसन्मान से युक्त बुध्दिजीवी स्त्रियॉ है ।

समकालिन दौर की कवयित्रियों में अनामिका का स्थान रेखांकनीय है । हिंन्दी कविता के समकालीन परिदृश्य में अनामिका की उपस्थिती न सिर्फ महत्वपूर्ण है बल्कि कविता के मूल्यांकन के लिए एक चुनौती भी है उनकी कविताओं में स्त्री अनुभव, स्त्री दुनिया को उजागर किया गया है । जब राजनीति और समाज विभिन्न क्षेत्रों मे महिला सशक्तिकरण का दौर शुरु हुआ तो साहित्य के क्षेत्र में भी यह घटना होना स्वाभाविक है । समकालीन कविता में अनाममिका ने अपनी अलग पहचान बनाई है । उनके स्त्री विमर्श में वह विद्रोही नारी नही है, जो गृहस्थ जीवन को तोडकर अपनी मुक्ति ढूँढ रही है। बल्कि वह,घर–'परिवार तथा समाज को साथ लेकर चल रही है । वह स्त्री के छबि को रोचक ढंग से प्रतिपादित करती है । स्त्री का जीवन गहन अन्तर्विरोधें तथा पुरुष वर्चस्व से ग्रस्त है । आज की उपभोक्तावादी संस्कृति ने स्त्री को पहले से अधिक विकृत कर दिया है । अनामिका ''स्त्री'' कविता के माध्यम से स्त्री की दशा, उसका अन्तर्जीवन एवं अनन्त दुखों की एक असमाप्त कथा की तरह स्त्री की वास्तविक दुनिया से परिचित कराते हुए कहती हैं –

वह रोटी बेलती है जैसे पृथ्वी
ज्वालामुखी बेलते हैं पहाड
भूचाल बेलते हैं घर
सन्नाटे शब्द बेलते है, भाटे समुन्दर
रोज सूबह सूजर में
एक नया उचकुन लगाकर
एक नई दाह फेंककर
वह रोटी बेलती हैं जैसे पृथ्वी ।'7

समकालीन कविताओं मे स्त्री संवेदना का एक और पक्ष मुखरित है –आत्मचिंतन । इसमें स्त्री अपनी अस्मिता और अस्तीत्व को लेकर सजग है। आज की स्त्री अपनी पहचान को पाने के लिए निर्मला पुतुल की स्त्री प्रतिरोध करते हुए प्रश्न करती है

क्या तुम जानते हो
एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण ?
बता सकते हो तुम
एक स्त्री को दृष्टि से देखते
उसके स्त्रीत्व की परिभाषा ?
अगर नही !
तो फिर जानते क्या हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे मे ?।[8]

इस तरह निर्मला पुतुल की कविताओं में स्त्री की अन्याय के विरोध में उठी आवाज आक्रोश में बदल जाती है। उसका संवेदनशील ऱ्हदय स्त्री की दयनीय दशा से व्यथित

हो उठता है। सहनशीलता की सीमाएँ जब समाप्त होती हैं तो क्रोध, क्षोभ भी अपनी सीमाएँ लॉघता है । निर्मलाजी की कई कविताएँ इस प्रकार की भावनांओं को अभिव्यक्त करती है।

गगन गिल की कविताएँ हिंसक होते समाज में जीती युवती के स्वप्न और दुःस्वप्न से संबंधित है । मसलन, 'मछली' शीर्षक कविता में स्वप्न की यह अनुगूँज हम देख सकते है। उनके कविता संकलन 'एक दिन लौटेगी लडकी' में अनेक कविताएँ स्त्री की बहुविध संकटग्रस्त स्थितीयों के संकेत से भरी पडी है । 'लडकी बैठी है हंसी के बारुद पर' शीर्षक कवितां में पूरे संयम के साथ गगन गिल ने स्त्री की स्थितियों का वर्णन बखूबी किया है –

लडकी बैठी है हॅसी के बारुद पर
उसकी हॅसी में
न स्मृति है, न कारण, न हिंसा
सिर्फ अॅधेरे का एक डर है
जो ठीक उसके पीछे खडा है ।[9]

समकालीन आलोक धन्वा की कविताएँ भी एक नया स्थापत्य रचती है । वह स्थापत्य स्त्री विमर्श के रुप में आनेवाली तीन कविताओं मे 'भागी हुई लडकियॉ', 'छंतों पर लडकियॉ' तथा 'ब्रूनो की बेटियॉ' में दिखाई देता है । इसके साथ ही राजेश जोशी की, कविताओं मे, इस कठीनतर समय में पुरुष और स्त्री का साथ सबसे बडा साथ है। स्त्रियॉ जो इस पूरे संघर्ष में एक गौण रुप लेती है सही मायने में इस कठीन दौर से निकलने का औजार उसी के पास है । भले ही उनकी 'उसकी गृहस्थी' कविता में स्त्री का अपना संसार ही रसोई दिखाता हो परन्तु यह जीवन का वह हिस्सा है जिसके बिना जिन्दगी थम जाएगी। यही व स्त्री है जो कठीनतम समय में पुरुष का सबसे बडा साथी है । इसी प्रकार उनकी दूसरी कविता 'उस पलम्बर का नाम क्या है' शीर्षक कविता में कवि ने स्त्रियों की संवेदनशीलता और जनसाधारण के प्रति सहानुभूति को उजागर करने वाली तथाकथित पंक्तियॉ स्त्री विमर्श के उॅचे नारों की तुलना में जादा महत्त्वपुर्ण है ।

संदर्भ ग्रंथ

1) राजे सुमन : हिंन्दी साहित्य का आधा इतिहास, पृ. सं.310
2) वही.
3) आज–कल, मई 2008, पृ सं.33.
4) वही.
5) श्रीवास्तव, परमानन्द : कविता का उत्तर जीवन, पृ.सं.187.
6) कात्यायनी : सात भाईयों के बीच चम्पा, पृ.सं. 13.
7) अनामिका : बीजाक्षर, पृ. सं. 26.
8) पुतुल निर्मला : नगाडे की तरह बजते शब्द, पृ.सं. 08.
9) गगन गिल : एक दिन लौटेगी लडकी, पृ .सं.. 26.